नवद्वीप पौथे पौथे गौरांग हे

तो यही road पर ही चल रहे होते हैं। यही..., यही है न...,महाप्रभु जन्म स्थान..., स्थान-घर? यही तो घर..., यही, *एई ते बाड़ी आछे महाप्रभुर।* Everyday..., यही तो meditate करना है। हम गौर-गौर कर रहे हैं, कैसे गौर? गौर, साथ हम भी तो हैं। गौर सपार्षद हैं न? तो सब लोग घर चले जाते हैं नित्यानंद प्रभु के, अत्याधिक प्रेम होने की वजह से वो नहीं जाते घर अपने। वो उनके साथ आ जाते हैं और हम भी उनके पीछे-पीछे आ जाते हैं। महाप्रभु के फिर हम चरण जो हैं धोऐंगे और अपने कपड़े से..., उत्तरीय से, साफ़ करेंगे, फिर उनको सुलाऐंगें, rest करावाऐंगें, फिर चरण दबाऐंगें।